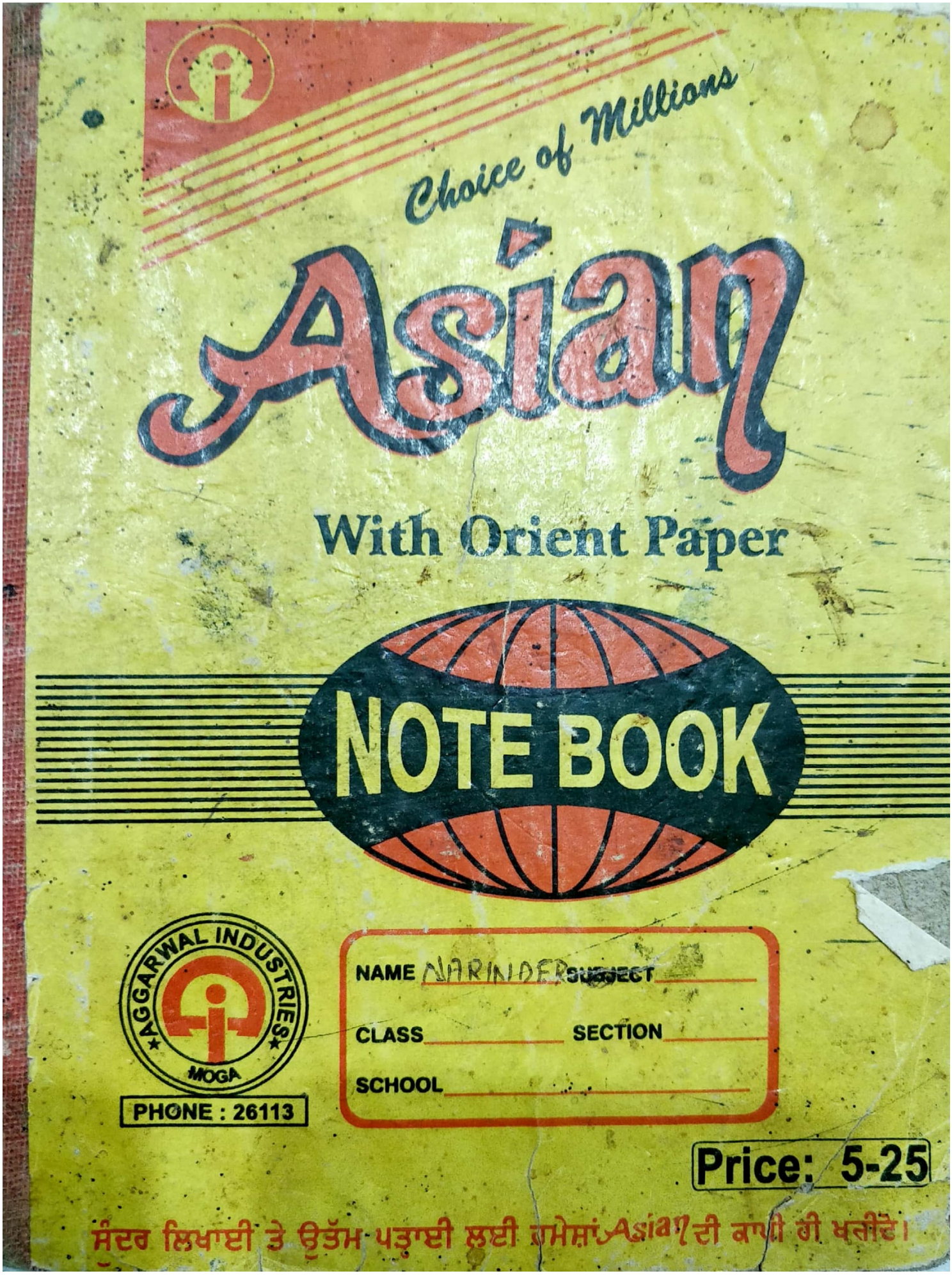

Choice of Millions

Asian

With Orient Paper

NOTE BOOK

AGGARWAL INDUSTRIES
MOGA

PHONE : 26113

NAME NARINDER SUBJECT ________

CLASS ________ SECTION ________

SCHOOL ________

Price: 5-25

ਸੁੰਦਰ ਲਿਖਾਈ ਤੇ ਉੱਤਮ ਪੜ੍ਹਾਈ ਲਈ ਹਮੇਸ਼ਾਂ Asian ਦੀ ਕਾਪੀ ਹੀ ਖਰੀਦੋ।

Scanned by CamScanner

(1) यदि एक राशि में एक अंश पर शनि, सूर्य या मंगल, बुध हों तो आँधी आती है।

(2) सूर्य या मंगल, गुरु हों तो भूकम्प आता है।

(3) सूर्य या मंगल, चन्द्र या शुक्र हो तो वर्षा होती है।

(4) चन्द्र या शुक्र से सातवें घर में शनि या सूर्य या मंगल हो तब भी वर्षा होती है।

(5) विषम राशि में ग्रह 6 अंश तक बालक, 6 अंश तक अगले कुमार, फिर 6 अंश तक तरुण, फिर 6 अंश तक वृद्ध, फिर 6 अंश तक मृत रहता है। समराशि में 6 अंश तक मृत, फिर 6 अंश तक वृद्ध, फिर 6 अंश तक युवा, फिर 6 अंश तक कुमार बालक रहता है।

(6) उदय ग्रह सुख देता है, वक्री ग्रह परदेश भेजता है, मार्गी ग्रह आरोग्य करता है, अस्त ग्रह आदर तथा धन का नाश करता है।

Scanned by CamScanner

षट् वर्ग फलादेश

'लग्न' या सूर्यादि स्पष्ट ग्रह की जो वर्तमान राशी के सामने और उसके

षोडशोपचार देव पूजा विधि

हाथ में जल लेकर ऊपर छिड़कें और पढ़ें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः। ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः। माधवाय नमः। फिर हाथ धोकर संकल्प करें - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भारतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्य प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने

अथानामसंवत्सरे अमुकायने महामंगल्य प्रदे मासानामुत्तमे ऽमुकमासे ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथि ऽमुकवासरे ऽमुकनक्षत्रे ऽमुक गोत्रोत्पन्न: ऽमुकनामाहं मम कायिकवाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं ऽमुक कर्म करिष्ये।

देवता प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति हो तो सुपारी पुष्प छोड़ दे। यदि प्रतिष्ठा की हुई न हो तो सुपारी के ऊपर मौली लपेट कर अक्षत के ऊपर स्थापित करके दाहिने हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र से छोड़े।। आवाहन।। आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव।। प्रतिष्ठा।। अस्यै: प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै: प्राणा: क्षरन्तु च। अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।। आसनम्।।

सूर्यं सुशोभितं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर पाहि माम्॥
उपनीतं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्। पद्मप्र-
-माल्यादि प्रियं दत्तं ते प्रतिगृह्यतामिदम्॥

होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में, साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सूर्य की सुखी, मान्य, उच्चपदस्थ, शासक, नेता, शीलवान, राज्यमान्य रेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो नीच प्रकृतिवाला, दुःशील, सम्पत्तिरहित, कर्म रहित जातक होता यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह शुक्र आदि की होरालग्न में

हो तो जातक ग्रह ... , सदाचार युक्त धनी, सन्तान वान सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, खीतथा नीच आचरण वाला होता है।

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। यदि स्वामी पाप ग्रह हो या पाप ग्रह की राशि में हो तो संतान नीच कर्म करने वाली होती है। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली, सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न

से 7 या 8वें स्थान में पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है।

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री के आचरण, स्वभाव देखना चाहिए नवमांश लग्न का स्वामी मंगल तो स्त्री क्रूर स्वभाव की, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्र स्वभाव की, चन्द्र हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण, बुध हो तो चतुर, सुन्दर आकृति, गुरु हो तो पतिव्रता ज्ञानवती, शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगार प्रिय, विलासी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, श्यामवर्ण यदि स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशि केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्त्री पूर्ण सुख। नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ 2, 11वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्री से अनेक प्रकार का लाभ। यदि स्वामी पापग्रह 6, 8, 12वें भाव में स्थित हो तो स्त्री सुख नहीं।

द्वदशांश

द्वदशांश लग्न से माता पिता के सुख-दुख का विचार। यदि स्वामी शुभ ग्रह तो माता पिता का शुभ आचरण, पाप ग्रह हो तो पापयुक्त आचरण। यदि स्वामी पुरुष ग्रह, अपनी राशि मित्र राशि, उच्च राशि में होकर 1।4।7।10 स्थान में हो जातक को पिता का पूर्ण सुख। यदि नीच राशि, शत्रु राशि, पापग्रह की राशि में स्थित हो या 6।8।12 भाव में बैठा हो तो पिता को अल्प सुख। यदि स्त्री ग्रह तो माता

यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो, गुरु आठवें, चन्द्र छठे तो मृत्यु तुल्य कष्ट

यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश, तृतीयेश, चतुर्थेश, नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हो तो तरक्की।

जन्म लग्न, राशि, वर्ष कुण्डली में आठवें हो अथवा उसमें राशि वर्ष लग्न हो और पापी क्रूर ग्रहों के साथ चतुर्थ भाव में पड़ा हो तो माता पिता को कष्ट होता है। चौथे शनि, दसवें मंगल, चौथे दसवें घर के स्वामी अस्त हो तो माता-पिता को कष्ट होता है।

| जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभ दायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि आठवें गुरु और चन्द्रमा हो तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल, दृग बल

स्थान बल - उच्च, मित्र गृह, मूल त्रिकोण, स्वराशि

दिग्बल → गुरु, बुध लग्न में, शुक्र चन्द्र चतुर्थ में,
शनि सप्तम में, सूर्य मंगल दशम में
कालबल - रात में जन्म पर चन्द्र, शनि और मंगल
तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य बुध, शुक्र, गुरु
~~नैसर्गिकबल~~ -
चेष्टाबल - मकर से मिथुन तक किसी राशी में रहने से सूर्य
चन्द्र मंगल

जन्म पत्री मृतक की है या जीवीत की →
(1) इस प्रश्न में जन्म लग्न, अष्टम स्थान की राशी
और प्रश्न लग्न इन तीन की संख्या को जोडकर
जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि और प्रश्न लग्न
इन तीनों को जोडकर जन्म कुण्डली के अष्टमेश की
राशी संख्या से गुणा कर लग्नेश की राशी
संख्या से भाग देने पर विषम अंक 1/3/5/7/9/11
शेष हो तो जीवित की, सम अंक 2/4/6/8/10/12
शेष रहे हो तो मृतक की पत्री होती है।

Scanned by CamScanner

(ii) जन्म लग्न, प्रश्न लग्न और जन्म कुण्डली के अष्टमेश की राशि इन तीनों को जोड़ने से जो योगफल आए उसे अष्टमेश की राशि से गुणा करना चाहिए और गुणन फल में प्रश्न समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसकी संख्या से भाग। सम शेष मृतक की, विषम जीवित

राहु और सूर्य जिस राशी पर हो उस राशि की अंक संख्या तथा लग्नांश संख्या को जोड़कर तीन का भाग देने से 0 या 1 बचे तो स्त्री, 2 बचे तो पुरुष

जन्म लग्न को छोड़कर अन्यत्र विषम स्थान में शनि स्थित हो और पुरुषग्रह बलवान हो तो पुरुष की पत्री विपरित में स्त्री की।

11/2005 بلکہ یوں ہے کہ ترکہ اس دنیا میں

Scanned by CamScanner

8 1 6

3 5 7

4 9 2

6 1 8

7 5 3

2 9 4

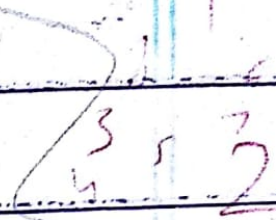

૬ ૧ ૮

૭ ૫ ૩

૨ ૯ ૪

Scanned by CamScanner

سنگل موسالی ... ہمراہ کاندڑدی برابر روزاں
سیل دی ٹوٹل ... فنا نچے ہو ... چوداں ۹ ماہ

اندر راہی ہوواں دکان تے چھپے بیٹھے
ٹیرائی۔ کالی طوطی ہوواں

کسم منگاں
ساہ ٹکیے
عشق موسالی

Scanned by CamScanner

کالا جیرو چھوڑیا جناں ،

وارث دی سسی مر گئی ماں

عاشق سجناں کا چھوڑ گئے

رب پڑھ پاؤں پڑے

اے ودیا [illegible]

مرے کوٹ

ے

چلے منت چھوڑ منھ والے

دکھاتے ساری کا ات

جیرو جیرہ

کالا جیرو

مرحوم نذر لودھی ٹیوا — FA 25/121

رانیاں نیں پھول گلابی نکے نکے چھوٹے چھوٹے کجراں گانی کنانی والیاں

سمل موسمی پیلی ٹول نار کیر — خوڑ میں جرح بڑھا دیا ئے

کڈیاں ڈو لالا — گھٹی ب ر ا ب ر و ن

جیوناں کان دی دارو

مرغو نچے ورتا وچھان نو نولا [illegible]
مرد [illegible]
[illegible] مشتاق [illegible]

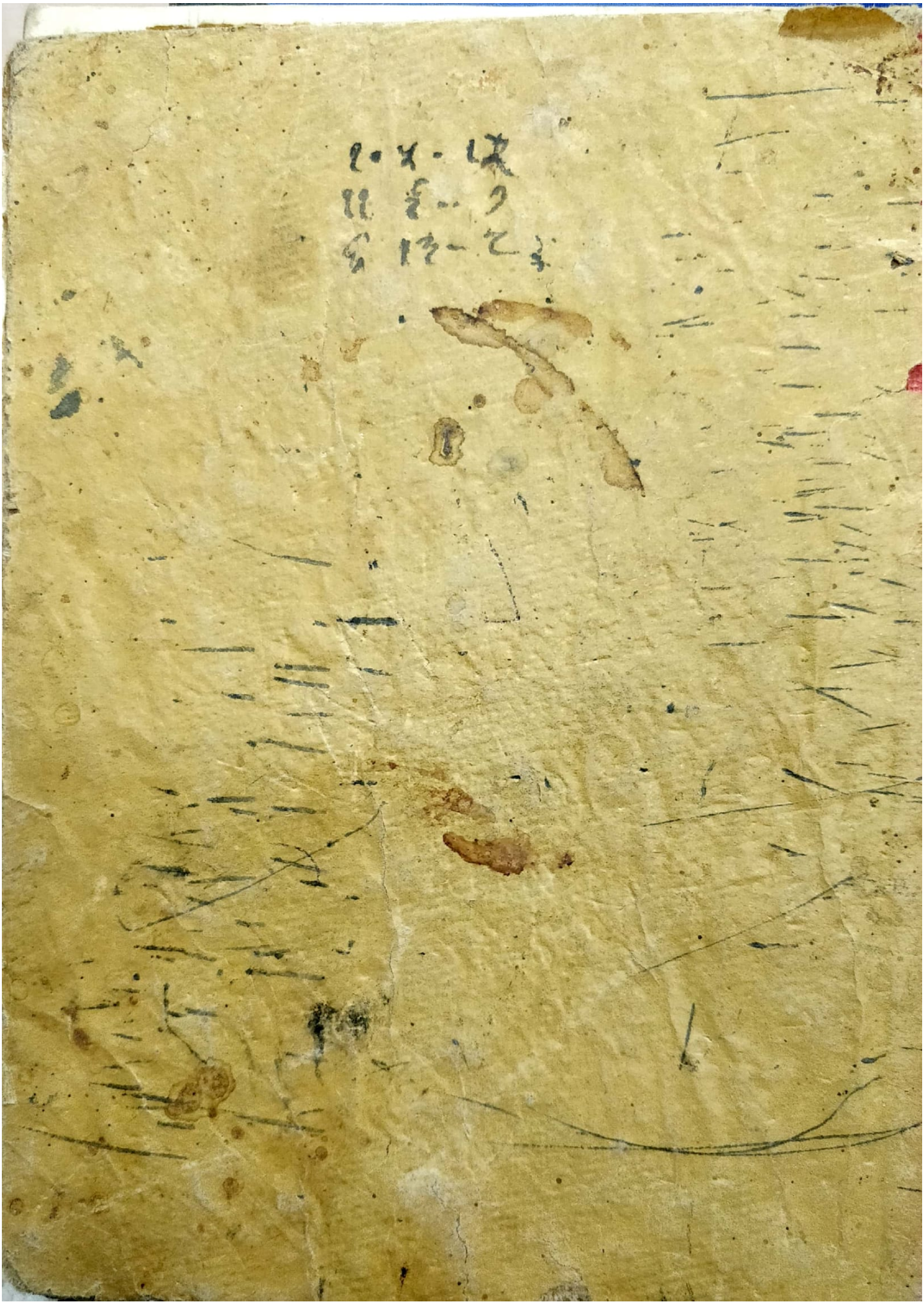

Scanned by CamScanner